इकाई 27 पहाड़

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य
27.1 प्रस्तावना
27.2 पहाड़ों के बारे में अवधारणाएं
  27.2.1 हिन्दुओं की दार्शनिक अवधारणाएं
  27.2.2 मध्ययुगीन शासकों की अवधारणाएं
  27.2.3 अंग्रेजी शासकों की अवधारणाएं
27.3 हिल स्टेशनों का विकास
  27.3.1 शिमला
  27.3.2 दार्जिलिंग
  27.3.3 नीलगिरी
  27.3.4 नैनीताल
27.4 पहाड़ों में राजनीतिक घटनाओं का ऐतिहासिक कालक्रम
27.5 स्थानीय समुदायों का विस्थापन
27.6 आमोद प्रमोद एवं पर्यावरण
27.7 पर्यावरणीय प्रभाव
27.8 सारांश
27.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

27.0 उद्देश्य

इस इकाई में पर्वतीय (हिल टूरिज्म) से पहाड़ों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों क बारे में चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन में आप

- आधुनिक काल से पहले जो (premodern) पहाड़ों के संबंध में रखी जाने वाली अवधारणाओं व सोच की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- शिमला, दार्जिलिंग, ऊटी, नैनीताल जैसे विशिष्ट हिल स्टेशनों की स्थापना व विकास के संबंध में जान सकेंगे
- पहाड़ों में रहने वाले स्थानीय मूल समुदायों के विस्थापन के संबंध में अगवत हो सकेंगे, और
- पहाड़ों पर स्थापित नई बस्तियों तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पहाड़ों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों से परिचित हो सकेंगे।

27.1 प्रस्तावना

पहाड़, स्वाभाविक रूप से आपके मन को एक भव्यता तथा विशालता का गहरा आत्मबोध पैदा कराते हैं; कोई धूल भरी हुई पगडंडियां, उच्च भूमि चारागाहों के पीछे दूर दिखाई देने वाली शिखरों की कोमलता को भंग नहीं करती है। लाल, पीले और बैंगनी फूलों की चादर ओढ़े तथा विविध वनस्पतियों की समृद्धि इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग का आभास करा देते हैं। वनस्पति जगत, सीढ़ीदार खेत, घने बेल-बूटे, हंसते उपवन, ऊंची-नीची चोटियां, हरी-भरी घाटियां, इठलाते झरने और बलखाती लहरें हमारी कल्पनाओं को सजीव कर देती हैं। पहाड़ों पर ये प्राकृतिक दृश्य मन को लुभा लेते हैं।

अनादिकाल से मानव मन तथा अनुभूति पहाड़ों की दूर दूर तक फैली पुरातन उन्मुक्त श्रृंखलाओं की

की शाश्वत भव्यता हमें पहाड़ों पर चढ़ने को प्रेरित करती हैं। मानवीय गतिविधियों से होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव, निश्चित रूप से अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है, पर इसके पूर्व प्राचीन काल से इन पहाड़ों के संबंध में विभिन्न सोच, कल्पना व अवधारणाओं के बारे में विचार करें और जानें।

27.2 पहाड़ों के बारे में अवधारणाएं

उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में नीलगिरी पर्वत प्रमुख भारतीय पर्वत हैं। इस उप महाद्वीप की सामाजिक व्यवस्थाओं में इन पहाड़ों के प्रति पर्यावरणीय प्रवृत्ति तथा विचारात्मक अवधारणा के संबंध में विविध दृष्टिकोण सामने आए हैं।

27.2.1 हिन्दुओं की दार्शनिक अवधारणा

हिन्दू धर्म की आस्था के अनुसार, हिमालय पर्वत के भौगोलिक महत्व या प्राकृतिक सौंदर्य की अपेक्षा धार्मिक महत्व कहीं अधिक है। आइए, महाकवि भारती की कुछ पंक्तियों का उदाहरण देंखे जिससे हिन्दू धर्म की हिमालय के प्रति अवधारणा बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी। कवि भारती कहते हैं– "सभी हिन्दुओं के लिए, सिवाय उनके जो हिमालय के स्थानीय निवासी हैं, हिमालय पर्वत यथार्थ की अपेक्षा काल्पनिक विचारधारा है। कैलाश पर्वत को रहने की संभावित जगह की अपेक्षा भगवान शिव के निवास का स्थान अधिक माना जाता है। भारती कहते हैं– "वहां रहने वाले लोगों और उनकी झोपड़ियों की अपेक्षा ऋषियों तथा मुनियों का हिमालय हिन्दुओं के लिए एक आदर्श के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है।"

प्रसिद्ध विद्वान एन्थोनी डी. किंग द्वारा लिखे गए लेख का यह अंश हिन्दुओं की विचारधारा को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

"हिन्दू धर्म के अनुसार प्राकृतिक सौंदर्य का स्थान सामाजिक आमोद प्रमोद या आत्म स्वार्थ संतुष्टि का स्थान नहीं है। यह स्वयं पर नियंत्रण करने, शांतिपूर्ण वातावरण में ध्यान लगाने का उपयुक्त स्थान है जिससे मन और मस्तिष्क प्रकृति से ईश्वर की ओर उन्मुख होता है। यह अवधारणा हिमालय के अतिरिक्त कहीं और इतने अच्छे तरीके के चरितार्थ नहीं होती है। इसलिए पवित्र मूर्तियों, मंदिरों और धार्मिक श्रद्धा के स्थानों के आसपास धीरे-धीरे धार्मिक आस्था के शहर विकसित हुए जो आदिकाल से संतों, ऋषियों और मुनियों द्वारा इस अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य के स्थान के रूप में चुने गए थे जहां भक्तगण श्रद्धालु अपनी तपस्या, योगसाधना, निश्चल, शांत, पवित्र वातावरण से निर्विघ्न संपादित कर सकें।"

बदरीनाथ, केदारनाथ, कैलाश मानसरोवर, वैष्णव देवी तथा तिरूपति जैसे धार्मिक महत्व व आस्था के पवित्र स्थलों का विकास इसी हिन्दू धार्मिक अवधारणा का परिणाम व प्रतीक है। पहाड़ी क्षेत्रों में स्थानीय वस्तियों तथा उनके आस-पास का शाश्वस्त सौंदर्य अछूता रहा।

27.2.2 मध्यकालीन शासकों की अवधारणा

मध्यकाल में भारत में तुर्क तथा अफगान शासकों का आगमन हुआ। तुगलक काल में हिमालय की तराई में कांगड़ा क्षेत्र को शाही नियंत्रण में लाया गया। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय समुदायों को शाही नियंत्रण तथा शासन के अधिकार क्षेत्र में लाए जाने का यह पहला प्रयास था। पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाले पहाड़ी बीर बांकुरो ने लगातार इन शाही आक्रमणों का डटकर विरोध व सामना किया।

मुगल शासकों के राज्य काल में पहली बार श्रीनगर के गर्मी के मौसम में आरामगाह बनाने का प्रयास किया गया। मुगल शासकों के अभिजात्य वर्ग ने नीचे मैदानी इलाकों की कड़ी झुलसाने वाले गर्मी को स्थान परिवर्तन की अपेक्षा विकास संबंधी निर्णयों से झेलने का प्रयास किया। इन सकारात्मक तथा विकासीय निर्णयों के अन्तर्गत पहाड़ों पर गर्मियां बिताने के बजाय जमीनी तहखाने, बारादरिया open walled pavilions तथा प्रकाश परिवर्तित करने वाला सफेद संगमरमर का उपयोग भवन निर्माणों के लिए बड़े-बड़े हॉजों तथा पर्याप्त सिंचाई युक्त भव्य उद्यानों का निर्माण करने के निर्णय करने के पक्ष में निश्चय हुआ।

27.2.3 अंग्रेज शासकों की अवधारणाएं

19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज के भारत में पूरी तरह स्थापित होने के बाद पहली बार लगभग सभी बड़े महत्वपूर्ण पहाड़ों को विकासीय योजना के अंतर्गत लाया गया। पहली बार पहाड़ों के प्रति धार्मिक आस्था के केन्द्रों को रिसॉर्ट केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने का कार्य प्रारंभ हुआ। यूरोपीय दृष्टिकोण के अनुसार पहाड़ों के प्रति एक आश्चर्य और कौतुहल की अवधारणा की जगह अब एक नए रोमांच तथा अन्वेषण की इच्छा अधिक व्याप्त और मुखरित हुई। जो सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित अवधारणा की प्रतीक तथा एक हद तक साम्यता के लिए हुए थी।

विज्ञान दर्शन तथा तकनीक के क्षेत्र में हुई प्रगति ने शताब्दियों से चली आ रही सोच तथा विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। अब पहाड़ों में अनेक संभावनाएं दिखाई देने लगीं। पहाड़ों की अहलादित करने वाली शुद्ध हवा तथा प्राकृतिक वातावरण की शुद्धता ने प्रकृति प्रेमियों तथा यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। 19 वीं शताब्दी के दौरान पहाड़ों पर किए जाने वाले प्रयोगों और पर्यावरणीय परिवर्तन के पीछे ब्रिटिश विचारधारा तथा भारतीय मौसम का हाथ था। इसके कारण एक नई बस्तियों या हिल स्टेशनों की स्थापना प्रारंभ हुआ। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ऐसे लगभग 200 हिल स्टेशन अस्तित्व में आए।

ब्रिटिश विचारधारा के अनुसार हिल स्टेशन का अवधारणात्मक तथा व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य दर्शाते थे। 18 वीं शताब्दी के यूरोप के रोमोंटिक्स ने हिमालय के प्रति नई सुखद मीठी कल्पनाएं उत्प्रेरित की। पहाड़ी क्षेत्रों की शाश्वत नीरवता, अभेद्य और अक्षत भूमि ने औद्योगिक यूरोप को शंका का दृष्टि से देखने वाले रोमोंटिक्स को आकर्षित किया। पहाड़ी पर्यावरण में सुंदर, प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत स्थान छुट्टियां और अवकाश बिताने के लिए कंट्री रिट्रिट बनाने के लिए सर्वथा उपयुक्त प्रतीत हुए। हिमालय की रोमांचक, अनोखी आकर्षक छवि से वे आनंदित हो गए। ईमली ईडन ने शिमला की पहाड़ियों के बारे में लिखा है- "इतनी सुंदर, जहां घाटियों में सफेद बादल तैरते से दिखाई देते हैं।" शिमला की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित जैको प्वाइंट के बारे में वो लिखती हैं- गुलाबी और सफेद बादलों का झुंड उनके ऊपर तैर रहा था और उनमें से कुछ के सुरमई (purple) शीर्ष उनके बीच एक टापू की तरह निकले हुए थे। बादल परदों के समान और वहां की घाटियां कचहरी हो गई थीं जो सूरज की सुनहरी किरणों से लिपटी हुई थीं और उनकी आकार हीनता के लिए, जिसका कारण यह पहाड़ियां हैं। अक्सर कोहरे से घाटियां छिपी रहती हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी का एक समकालीन फौजी अफसर, हिमालय क्षेत्र की यात्रा करने वाला डी.जे.एफ. नेवाल बर्फ से ढंकी कंचनजंघा की पर्वत श्रेणियों की भव्यता व मोहकता से अचंभित रह गया था। वह लिखता है जिसने भी डूबते सुरज की सुनहरी किरणों से कंचनजंघा के शिखरों को देखा है, रात की परछाइयां पहाड़ों की तलहटी पर धीरे-धीरे छा रही है। क्या कोई ऐसे भव्य, अनोखे दृश्यों को आजीवन भूला सकता है जो सारी दुनिया में अद्वितीय और विलक्षण है।

चौड़ी, चमकदार, इठलाती बहती संगीत नदी की अदभुत दृश्यावली, पश्चिमी दिशा से आने वाली वर्षा से बनी उसकी जलधाराएं तथा सहायक नदियां, तिस्ता नदी का गहरे कंच रंग के पानी का ऊफान, बेल-बूटों से घिरे उसके किनारे और समीपस्थ भूखंडों के अदभुत दृश्य किसी भी प्रकृति प्रेमी के लिए बेशक मनमोहक अनुभव उत्पन्न करते हैं।

ब्रिटिश साम्राज्यवादी राज्य की व्यावहारिक जरूरतों तथा अंग्रेजों के हिन्दुस्तानी मौसम के कड़वे तीखे अनुभवों ने भी पहाड़ों पर हिल स्टेशन विकसित करने की आवश्यकता को प्रतिपादित किया। ब्रिटिश साम्राज्य की व्यावहारिक जरूरत यह थी कि उपनिवेश की उत्तर-पश्चिम सीमाओं की सैन्य सुरक्षा भी करती थी। एक तरफ तो ब्रिटिश राज्य को सैन्य महत्व के दृष्टिकोण से अफगानिस्तान और तिब्बत में बढ़ते रूसी प्रभाव को रोकने के लिए भी हिल स्टेशनों को विकसित करना अनिवार्य और महत्वपूर्ण था तथा दूसरी ओर हिमालय में रहने वाले वीर, साहसी, अति उत्साही गोरखों को भी नियंत्रण में रखना था।

ब्रिटिश अभिजात्य वर्ग को भारत के मैदानों की भीषण गर्मी असहनीय लगी। भारत के मैदानी इलाके

अनेक घातक बीमारियों से भरे पड़े थे। विशेष रूप से गर्मी के महीनों में तेजी से फैलने वाले मलेरिया, हैजा तथा काला बुखार जैसी बीमारियों ने यूरोपवासियों को परेशान किया। 1828 में कैप्टेन पीटरमुंडी को शिमला की जलवायु अंग्रेजों के लिए अनुकूल लगी। 19 वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित अवधारणा में स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूकता थी। यूरोपीय शुद्ध ताजी हवा, स्वास्थ्यवर्द्धक पानी, रोज का थोड़ा नियमित शारीरिक व्यायाम और स्नान पर बहुत जोर देते थे। पहाड़ों की इस स्वास्थ्यवर्द्धक और स्फूर्ति कारक वाली आबोहवा इस यूरोपीय अवधारणा के अनुकूल साबित हुई। अंग्रेज शासक लायड ने दार्जिलिंग को सेनिटोरिम बनाने के लिए पूर्णतः उपयुक्त पाया।

भारतीय पहाड़ों की आबोहवा उन्हें अपने देश (इंगलैंड) के वातावरण से मिलती जुलती थी। देश की याद ने उन्हें पहाड़ों में हिल स्टेशनों को विकसित करने के लिए प्रेरित किया। भारतीय पहाड़ उन्हें अपने देश समान लगे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में भारत के वायसराय लॉर्ड लिटन अपनी ऊटी की यात्रा के दौरान इंगलैंड की याद आने पर बहुत भावुक हो गए।

"दोपहर में वर्षा हो रही थी तथा सड़कों पर कीचड़ भर गया था। पर ऐसी सुंदर अंग्रेजी बारिश, ऐसी बढ़िया इंगलैंड की मिट्टी। कल्पना करें हर्ट फोर्डशायर की गालियां, डेवोनशायर का शहरी इलाका, वेस्टमोरलैंड की झीलें, स्कॉच के झरने ट्राउट तथा लूस्टीनियन की दृश्यावलियां की।'' इन सभी कारणों से तथा नए उत्पादन के तरीकों से जो औद्योगिकी पर निर्भर थे तथा शहरी संस्कृति के कारण भारत में हिल रिसार्टस का उदय हुआ।

पूर्व औपनिवेशक से औपनिवेशिक काल तक पहाड़ों पर पर्यावरण के पर बदलते प्रभाव का भी संकेत है। यह इन तथ्यों से परिलक्षित है :

- इन पहाड़ी स्थलों के विकास के दौरान विकासीय दृष्टिकोण तथा प्राकृतिक सौंदर्य की अवधारणा के बीच उत्पन्न संघर्ष
- पहाड़ों में शक्ति और सत्ता के बदलते समीकरण
- स्थानीय पहाड़ी समुदायों तथा निवासियों का विस्थापन और
- आदर्श व संस्कृति के बदलते प्रतिमान जो महज आमोद प्रमोद तथा स्वास्थ्य लाभ पर आकर केंद्रित हो गए हैं।

बोध प्रश्न 1

1) पहाड़ों के प्रति पारम्परिक हिन्दू विचारधारा पर पांच वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) पहले की अवधारणाओं से ब्रिटिश अवधारणा किस तरह अलग थी ?

.....

.....

.....

.....

27.3 हिल स्टेशनों की स्थापना

एक बार जहां यूरोपीय यात्रियों ने भारत के पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य और आनन्द को पहचान लिया, तो फिर इन पहाड़ों पर हिल रिसॉर्ट-एवं-ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाने का पूरा प्रयास किया। 19 वीं शताब्दी के दौरान पहाड़ों पर लगभग 200 हिल स्टेशन बनाए गए। उत्तर में शिमला से लेकर लान्डूर तक, पूर्व में दार्जलिंग तथा दक्षिण में ऊटी और कोडयकनाल तक भारतीय गर्मी से पीड़ित अनेक अंग्रेज अभिजात्य वर्ग के लोगों की आवश्यकता के अनुरूप अनेक हिल स्टेशन विकसित हो गए।

अंग्रेजों की आशाओं, आकांक्षाओं के परिणामस्वरूप पहाड़ों के स्थानीय प्राकृतिक वास में अनेक परिवर्तन करने पड़े। फिर पहाड़ों के प्राकृतिक भूदृश्य को मिटाते हुए स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से एक स्थानीय विभेदीकरण से युक्त नई शहरी व्यवस्था उभरी। 19 वीं शताब्दी के दौरान कुछ प्रमुख हिल स्टेशनों के उदय तथा विकास का अध्ययन करते हुए हम पहाड़ों पर इनके पर्यावरणीय प्रभावों को समझने की कोशिश करेंगे।

27.3.1 शिमला

पंजाब राज्य में शिमला (31.6 डिग्री उत्तर, 77.1 डिग्री पूर्व) 7000 फीट से अधिक ऊँचाई पर हिमालय मध्य स्कंध पर स्थित है। एक पहाड़ी जैको (जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है) लगभग 1000 फीट ऊँची है जो चारों ओर से देवदार, ओक तथा रोडोडेन्डरोन के वृक्षों से घिरी हुई है। यह पहाड़ी शिमलाह या शुमलाह स्टेशन जैसा कि यहां के स्थानीय पहाड़ी लोगों द्वारा पुकारा जाता है (यह नाम मंदिर की देवी श्यामली से लिया गया है) के पूर्व में स्थित है। इस स्थान का नाम शिमलाह या शुमलाह यहां स्थित श्यामली देवी के मंदिर से लिया गया है। प्रास्पेक्ट हिल तथा आब्जरवेटरी हिल पहाड़ों के पश्चिमी भाग में स्थित है। आननडाले जैसी सुंदर पहाड़ी घाटी में अंग्रेजों के जमाने में सामाजिक जीवन केंद्र थी अप्रैल के माह में यहां पत्थरों पर सुंदर खिले हुए पीले फूल दिखते हैं मुख्य पहाड़ी के उत्तरी इलाके में पहाड़ों की फैली चोटियों पर एलिसियम की पहाड़ियां हैं जिनका नाम लार्ड आकलैंड की दो इडन बहनों के नाम पर पड़ा है।

1904 के गजेटियर के अनुसार शिमला एक उजाड़ पहाड़ी इलाका था जो गोरखा युद्ध की समाप्ति पर 1816 में सेगोली की संधि के द्वारा अंग्रेजों ने अपने कब्जे में रखा था। उसके बाद वर्तमान शिमला का पूरा इलाका अंग्रेजों द्वारा क्योनथाल तथा कोठी के राजा तथा पटियाला के महाराज से खरीद लिया गया था। वायसराय सर जॉन लारेन्स के समय 1864 में जब शिमला को गर्मियों की राजधानी बनाने का निर्णय लिया गया तभी से शिमला के विकास में तेजी आई थी। सन 1868 से 1881 के बीच इस जिले की जनसंख्या लगभग 32.9% बढ़ गई थी। यह सारी आबादी अकेले शिमला शहर में ही बढ़ी। 1891 में शिमला में 13034 की आबादी 1901 में बढ़कर 13960 हो गई थी।

1878 में पहली बार लार्ड लिटन के समय में शिमला में अच्छी सड़कें बनाने की योजना को कार्यान्वित किया गया। जैको पहाड़ी के पीछे दो चौड़ी सड़कें गार्टन कासल इस्टेट तथा 'लेडिज' मिली के नीचे बनाई गई। वायसराय लॉज से लेकर जैको पहाड़ी तक लगभग 10 मील लम्बाई तक माल रोड को चौड़ा किया गया, उसमें सुधार किया गया तथा उस सड़क को चौपहिया परिवहन साधनों के आने जाने के लायक बनाया गया। 1879 में माल रोड की स्थिति काफी अच्छी होने के कारण वहां पहियों वाले वाहनों का आना जाना शुरू हो गया था। अब झम्पान तथा डांडियों का स्थान रिक्शा ने ले लिया था।

बींसवी शताब्दी के प्रारंभ में इन पहाड़ों पर मोटरों का आना जाना शुरू हो गया था। शिमला में अब तक व्यापार तथा व्यावसायिक गतिविधियां भी बढ़ गई थीं। बड़ा बाजार लक्कड़ बाजार, संजौली बाजार जैसे छोटे छोटे स्थानीय हाट बाजार धीरे-धीरे बढ़ने लगे। लक्कड़ बाजार मुख्यत: जलान्धर तथा होशियारपुर से आए लकड़ी की बढ़िया नक्काशी करने वाले कारीगरों द्वारा विकसित किया गया था। शिमला में सीमांत तथा अन्तरक्षेत्रीय व्यापार के कारण लोक निर्माण विभाग के द्वारा शिमला कालका के बीच पहाड़ों को काटकर बैलगाड़ी के आने जाने के लायक सड़क बनाई गई। यह सड़क 58 मीटर

लम्बी थी। सन् 1900 में कैथू तथा संजौली के बीच सड़क का निर्माण करने की योजना बनाई गई जिसमें कि खच्चरों तथा सर पर बोझा ढोने वाले कुलियों के लिए माल के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता संभव हो सके। पहाड़ों के नीचे बनाई गई पक्की सुरंग तथा सजौली-कैथ सड़क शिमला बाजार तथा सजौली के बीच सीधा संचार साधन था जो विशेष रूप से अंग्रेज के द्वारा निजी तौर पर उपयोग में लाए जाने वाले माल से भिन्न था। माल रोड को बहुत वैज्ञानिक ढंग से सीधी कतार में बनाया गया है जिसके दोनों ओर व्यवस्थित तथा नियोजित ढंग से बनाई गई पक्की दुकानें थीं जो ज्यादातर यूरोपियन लोगों के स्वामित्व में थी। अंग्रेजों के समय यह स्थान एलायंस बैंक ऑफ शिमला का मुख्यालय था जो 1874 में यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के विघटन होने पर बनाया गया था। इसके अतिरिक्त वहां दिल्ली तथा लंदन बैंक, बैंक ऑफ अपर इंडिया (मेरठ) थीं तथा पंजाब बैंकिग कम्पनी लाहौर की शाखाएं थीं। मेसर्स बरार एंड कम्पनी शिमला का पहला यूरोपीय व्यावसायिक प्रतिष्ठान था। शिमला में अब नए शहरी केन्द्र, होटल, बोर्डिंग हाउस तथा सेनिटोरिम उभरे तथा इनमें नई व्यावसायिक व आर्थिक गतिविधियों का संचालन शुरू किया गया।

1845 में माल रोड पर होटल पैवेलियन स्थापित किया गया। अगले कुछ सालों में इस होटल में बिलियर्ड, टेबल टेनिस, टेनिस कोर्ट तथा नाचने के लिए अलग से एक हॉल बनाया गया। इसी बीच शिमला एक प्रधान व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ जहां विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला। शिमला में अफीम, आलू, ऊन, बोराक्स, ऊनी कपड़े, अर्धरत्न पत्थर, बकरियां तथा घोड़े व्यापार की प्रमुख वस्तुएं थीं।

20वीं शताब्दी में पहाड़ों के पर्यावरण में बाहरी घुसपैठ हुई। कालका शिमला के बीच एक छोटी लाइन वाला रेलवे मार्ग सन 1900 में बनाया गया जो 1903 में सार्वजनिक यातायात के लिए खोल दिया गया। अब शिमला से मैदानों तक का लम्बा रास्ता मात्र साढ़े सात घंटे की यात्रा था।

इन सब कारणों से 1830 में शिमला के 30 घर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक बढ़कर 2000 हो गए थे।

27.3.2 दार्जलिंग

अंग्रेजी शासन के समय बंगाल के लेफ्टिनेंट गर्वनर की ग्रीष्म कालीन राजधानी राजशाए डिविजन के अन्तर्गत आती थी। 26 डिग्री 30' 50' तथा 27 डिग्री 12' 44' आक्षांश तथा 88 डिग्री 30' डिग्री और 88' 56' 35' देशांतर के बीच समुद्र तल से 7500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। 1234 वर्ग मील का यह क्षेत्र अर्ध चंद्राकार आकार वाला क्षेत्र है। 1901 में दार्जलिंग की कुल जनसंख्या 94722 थी।

दार्जलिंग शब्द दारज्व-लिंग का अपभ्रंश है जिसकी तिब्बती भाषा में अर्थ होता है लामा धर्म की रहस्यमय शक्ति जो बौद्ध मठ को दी जाने वाली पवित्र संज्ञा थी। यह बौद्ध मठ दार्जलिंग में ऑवजखेटरी हिल के शिखर पर स्थित था। इस क्षेत्र में स्थानीय आदिवासी लेपचाओं की मान्यता है कि यह स्थान देवताओं की प्रिय संतान की स्थली है। तितात्या और सगोली की संधि के अन्तर्गत नेपाल दरबार ने इस इलाके की 4000 वर्ग मील की भूमि सन 1816 में ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दी गई थी।

तकनीकी दृष्टि से यह क्षेत्र सिक्किम के राजा के अधीनस्थ था और उसकी ओर से ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हस्तक्षेप किया था। सन 1835 में सिक्किम के राजा ने अनौपचारिक रूप से यह क्षेत्र गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बेन्टिक के समय में ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दिया था। दार्जलिंग गजेटियर में दार्जलिंग की प्राकृतिक स्थिति के बारे में लिखा– "अपने आप में अकेला, अलग यह सुंदर शहर पहाड़ी चोटियों पर बसा है जो हिमालय के मध्य में विस्तृत फैली घाटी के रूप में उभरता है।

वर्ष 1866, दार्जलिंग के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत के रूप में महत्व रखता है। इसकी सीमाओं में परिपूर्ण शांति स्थापित हो गई थी। 1908 के दार्जिलिंग गजेटियर ने लिखा– "इसके बाद अज्ञात रूप से सभ्यता और प्रगति का नया स्वरूप सामने आया।'' दार्जलिंग के विकास से जुड़े यूरोपीय अधिकारियों में कैप्टेन लायड का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। जिन्होंने दार्जलिंग शहर की खोज

करके एक टी.बी. सेनिटोरियम तथा 8000 फीट की ऊँचाई पर स्थित जलपहाड़ पर स्वास्थ्य लाभ के लिए फैजी डिपो बनाने के लिए जगह हासिल की थी। डॉ. कैम्पबेल को इस क्षेत्र में चाय की खेती प्रारंभ करने तथा जिले के सामान्य विकास के लिए तथा लार्ड नेपियर को दार्जलिंग स्टेशन बनाने की योजना तथा निचले मैदानों से ऊपर पहाड़ी इलाके तक सड़क निर्माण के लिए याद रखा जाएगा।

दार्जलिंग में तराई से पहाड़ों तक जाने वाली मोटर सड़क का निर्माण 1861 में प्रारंभ हुआ। यह इंजिनियरिंग का एक अदभूत नमूना था जिसकी वजह से बाद में इस क्षेत्र में रेलवे लाइन बिछाने का कार्य तुलनात्मक रूप से बहुत सरल हो गया। उसी समय गंगा नदी से सिलीगुड़ी तक एक लम्बी चौड़ी सड़क बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ। यह निर्माण कार्य 14.7 लाख की लागत से वर्ष 1861 में प्रारंभ हुआ। निर्माण के इस कार्य के पहले इस साहसिक कार्य के प्रणेता जे.डी.हुकर (1848) तथा लोरेटो कान्वेन्ट की नन्स ने कलकत्ता से लेकर इस पहाड़ी क्षेत्र तक की लम्बी यात्रा हाथियों, डोलियों, नावों तथा लकड़ी के तख्तों पर की। यह सब विकास कार्य उत्तरी सीमा क्षेत्र में व्यवसाय के विकास तथा पहिया वाहनों के आवागमन के विकास की दृष्टि से हो रहा था।

सन 1881 में दार्जलिंग हिमालय रेलवे लाइन के निर्माण से कलकत्ता से दार्जलिंग तक की लम्बी यात्रा मात्र एक दिन में पूरी की जा सकती थी। रेलवे निर्माण के इस इंजीनियरिंग कौशल तथा रेलवे यात्रा का सबसे अधिक आकर्षण यह था कि दार्जलिंग के समीप रेलवे लाइन एक तरह से पूरी घूम कर अंग्रेजी भाषा के 'यू' शब्द की तरह बिछाई गई जिसे 'बतासिया लूप' कहा जाता है।

1881 से 1891 के बीच दार्जलिंग की आबादी दोगनी हो गई थी। दार्जलिंग को वहां उगाई जाने वाली हरी पत्तियों वाली स्वादिष्ट लाजवाब चाय ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दे दी। डॉ. कैम्बेल के प्रोत्साहन के कारण वहां चाय के बगान भारी मात्रा में लगाए गए। दार्जलिंग की नमी वाली आबोहवा चाय की खेती की सफलता सुनिश्चित करती है।

27.3.3 नीलगिरी

दक्षिण भारत की इन पहाड़ियों में सबसे पहले फेरीरी के मानारेकाटे (1602-1603) ने यात्रा की थी। सत्रहवीं शताब्दी के पहले से यूरोपवासी नीलगिरी पहाड़ियों से परिचित थे। नीलगिरी का त्रिनमाला पहाड़ियों का दक्षिण भारतीय हिन्दुओं के लिए बड़ा धार्मिक महत्व है क्योंकि इन पहाड़ियों के शीर्ष पर प्रसिद्ध पवित्र तिरूपति मंदिर स्थित है। पहाड़ों के प्रति धार्मिक महत्व व आस्था की अपेक्षा अंग्रेजों ने पहाड़ों के प्रति व्यावसायिक लाभ का व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया था। ऊटी तथा कोडइकनाल लोकप्रिय हिल स्टेशन थे जो दक्षिण प्रायद्वीप में कार्यरत अंग्रेज समाज के अभिजात्य वर्ग की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

ऊटी का वर्तमान (ऊटकमंड या ऊटी) नाम कैसे पड़ा यह अपने आप में अनेक विवादों से घिरा विषय है। मुंड का अर्थ टोडा भाषा में गांव होता है। नीलगिरी पहाड़ियों के इस हिस्से में रहने वाली मूल आदिवासी प्रजाति टोडा कहलाती है। टोडा लोग इस स्थान को पटखमुंड कहा करते थे। प्रथम ब्रिटिश अधिकारी सर फ्रेडरिक प्राइस जिन्होंने ऊटी के विकास के इतिहास का पता लगाया है इस मत के हैं। इस नाम का अपभ्रंश यहां बाहर से आकर बसने वाले कृषि समुदाय बडागारों ने प्रचलित किया है। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने इस हिल स्टेशन को खोजकर पहले इसे वोटाकायमंड कहना शुरू किया, बिगड़ते बिगड़ते अब यह ऊटकमुंड या ऊटी के नाम से जाना जाता है।

कोयम्बटूर के जिलाधीश सुलिबान ने सबसे पहले पूरे जोर शोर तथा लगन से ऊटी के विकास का कार्य प्रारंभ किया था। उनके प्रयासों से सबसे पहले वर्ष 1827 में यहां पहला मिलिटरी सेनेटोरियम स्थापित हुआ था। 19 वीं शताब्दी के अंत तक पूरे दक्षिण भारत में ऊटकमंड गर्मी के मौसम में सबसे अधिक लोकप्रिय स्वास्थ लाभ का केंद्र (हेल्थ रिसॉर्ट) बन गया था।

सुलिवन ने सबसे पहले 1822-23 में काले पत्थरों का पहला बंगला बनवाया था जिसका नाम काला बंगला रखा गया था। श्री मुगाई से प्रारंभ होकर कोटागिरी तथा डिमहटी से होती हुई नीलगिरी तक पहुंचने वाली पहली सड़क बनाई गई। सर फेडरिक प्राइस का मानना था कि इस क्षेत्र की भूमि कृषि, योग्य नहीं है परंतु इस क्षेत्र में रहने वाले बडागर कृषकों के समुदाय ने इस आशंका को असत्य सिद्ध

कर दिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि सुलिवान ने इस पहाड़ी इलाके में कृषि, फला और फूलों की खेती के लिए नए आधुनिक उन्नत तरीकों को लागू किया। सुलिवान ने यूरोप से विशेष रूप से अच्छे मालियों तथा किसानों को वहां बुलाकर पहली बार इस क्षेत्र में सेबा, आड़ू तथा स्ट्राबेरी जैसे फलों की खेती करवाई तथा उटकमंड में अंग्रेजी सब्जियों की भी पैदावार शुरू की। जौ, जो पहाड़ों के निचले पठारों में गैर महत्वपूर्ण तथा सस्ती फसल मानी जाती थी प्राइस का कहना है कि बडागर कृषक समुदाय को इसके पैदावार की जानकारी पहले से थी जिसे वे 'सुलिवन गांगी' के नाम से जानते थे तथा इसके बीज सबसे पहले प्राइस महोदय ने यूरोप से आयात करवाए थे।

1827 में ऊटी को फौजी छावनी में परिवर्तित कर दिया गया था। मेजर केल्सो ने यहां पर स्थानीय हाट तथा अंग्रेजों के लिए विशिष्ट बाजार बनवाए। मद्रास स्थित अंग्रेज सरकार के आदेशों के तहत यहां सबसे पहले कैप्टन अन्डरवुड ने विकलांग फौजियों के लिए एक अच्छा सेनिटोरियम, अंग्रेज अफसरों के लिए अच्छे पक्के, सुरक्षित मकान तथा पहाड़ों में पहली बार आने वाले अंग्रेजों के लिए उपयुक्त आवासीय व्यवस्था की। 1842 से 1848 के बीच गवर्नर टिवीडेल के नेतृत्व में पहली बार ऊटकमंड से कोटगिरी तक सड़क बनवाई गई। 1880 तथा 1890 के बीच पूरे ऊटकमंड तथा उसके समीपस्थ स्थानों में पक्की सड़कों का निर्माण करवाया गया। संरक्षण के कार्य को प्राथमिकता दी गई। सड़कों पर गैस बत्ती वाले लैम्प लगवाए गए, जल आपूर्ति की व्यवस्था की गई। ऊटकमंड से गंदे पानी के निकास के लिए उपयुक्त लाइनों की योजना शैगनैसी द्वारा की गई और उसका क्रियान्वयन भी किया जो पूरे भारत में सबसे उत्तम निकास व्यवस्था थी। ऊटकमंड की पहाड़ी और उसके चारों ओर गोंद के पेड़ लगवाए गए। अलग से एक अच्छे पक्के दैनिक हाट बाजार का निर्माण करवाया गया। 1860 से 1870 के बीच मद्रास रेल लाइन को काफी अच्छी तरह से विस्तारित किया गया। सिनचोना के पेड़ तो वर्तमान तक शासन के आधिपत्य में थे उन्हें भी ऊटकमंड में लगवाया गया।

27.3.4 नैनीताल

नैनीताल उत्तरी भारत का एक अन्य प्रसिद्ध हिल स्टेशन है जो 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज्य के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में कुमायूं पहाड़ियों में स्थापित किया गया। नैनीताल 29 डिग्री 22 अंक्षास तथा 79 डिग्री 29' 35" देशांतर के बीच समुद्र तल से 6409 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। वर्ष 1902 में इस स्थान की जनसंख्या 8455 थी जो पर्यटन के लिए अनुकूल मौसम में बहुत तेजी से बढ़ती थी। यह हिल स्टेशन एक सुंदर झील के किनारे सुंदर वादियों में स्थित है तथा मैदान में रहने वाले यूरोपियनों के लिए एक अत्यधिक लोकप्रिय तथा पंसदीदा समर रिसॉर्ट था। 19 वीं शताब्दी के एक समकालीन भूगर्भशास्त्री श्रीमान ओलडहॉम का मानना है कि वह घाटी जहां "नैनीताल" अनेक सुंदर पहाड़ियों से घिरा हुआ स्थित है अनेक प्रकार के पत्थरों जैसे खंडित स्तरित चट्टानों तथा चूने के पत्थर से बनी है। उनमें एक ही समानता है कि वे अपनी बनावट में काफी अव्यवस्थित हैं तथा अपनी शैल वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में टूटे फूटे हैं। 19 वीं शताब्दी में एक बार जहां नैनीताल उत्तर पश्चिमी सूबे और अबध के लेफ्टिनेंट गर्वनर ग्रीष्म कालीन आराम ग्राह बन गया तब हिमालय की वादियों में बसे नैनीताल की स्थानीय बस्ती ने हिमालय की इस पर्वत श्रेणी में तेजी से परिवर्तन किया। पहाड़ों में चारों ओर बैलगाड़ियों के आने जाने के लिए मार्ग बनवाए गए। वनों में पेड़ लगवाए गए जिसमें ओक के वृक्षों की बहुलता थीं। कुमायूं की टिम्बर कम्पनी ने जो मुख्यत: अंग्रेजों के स्वामित्व में थी, नैनीताल के सघन वनों का दोहन व्यावसायिक लाभों के लिए करना शुरू कर दिया था। इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा भारी संख्या में आने के कारण अंग्रेज व्यापारियों ने अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने क लिए व्यावसायिक गतिविधियां तथा दुकाने स्थापित कर दीं। उत्तर में नैनीताल की सबसे ऊँची चोटी चाइना पीक (8508 फीट) तथा पश्चिम में देवपाथा (7987 फीट) तथा दक्षिण में आर्यपाथा (7461 फीट) की चोटी है।

देश के अन्य प्रमुख लोकप्रिय हिल स्टेशन हैं : पंचमढ़ी, महाबलेश्वर, डलहौजी, मसूरी तथा शिलांग इत्यादि। इन तमाम हिल स्टेशनों को स्थापित होने से पहाड़ों में पाई जाने वाली स्थानीय वनस्पतियों तथा पहाड़ों के सामान्य प्राकृतिक वासों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस पक्ष पर हम इसी खंड की इकाई 27.7 में और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

27.4 पहाड़ों में राजनीतिक घटनाओं का ऐतिहासिक कालक्रम

लम्बाई और चौड़ाई के विस्तार में पहाड़ अपनी अदम्य शक्ति और भव्यता को प्रदर्शित करते हैं। हिन्दू धर्म की अवधारणा के अनुरूप जैसे पहले ऊपर बताया जा चुका है हिमालय को अनेक पवित्र देवी देवताओं का निवास स्थल माना जाता है। इस दृष्टि से हिमालय पर्वतों को भी धार्मिक व आस्था की अवधारणा तथा व्यवस्था के रूप में वंदनीय और श्रद्धा का प्रतीक माना जाता है। मोक्ष की तलाश में आध्यात्मिक गुरूओं ने पहाड़ में रहनेवाली स्थानीय पहाड़ी प्रजातियों की पूरी तरह उपेक्षा की है। मध्यकालीन अवधि में प्रथमत: तुगलकों और बाद में मुगल शासकों द्वारा हिमालय क्षेत्र के राजपूत राजाओं तथा स्थानीय आदिवासी समुदायों पर अपनी सत्ता और निरंकुशता का दबदबा बनाया था।

ब्रिटिश कालीन समय में पहली बार सत्ता के लिए षडयंत्र करने की प्रवृत्ति अधिक प्रबल हुई क्योंकि इस क्षेत्र की धरती तथा अकृष्टपूर्व सघन वनों पर पर्याप्त प्रभाव स्थापित करने के लिए उनके पास पर्याप्त तकनीकी, वैज्ञानिक, औद्योगिक तथा आर्थिक संसाधन थे। इस प्रक्रिया ने पहाड़ों की पारिस्थितिकी संतुलन को काफी हद तक गड़बड़ा दिया है। शक्ति व सत्ता को प्राथमिकता दी गई तथा ब्रिटिश राज के बढ़ते हुए प्रशासकीय प्रभाव के कारण पहाड़ों के प्राकृतिक वास में प्रशासकीय तंत्र की सत्ता का प्रवेश हो गया।

पहाड़ी समाज में सत्ता, वर्चस्व, आधिपत्य और ऊचीनता का समावेश हुआ। समाज वर्गों में विभाजित हुआ। यह पहली बार अंग्रेजों के समय में हुआ। पहाड़ी क्षेत्रों के बड़े पैमाने पर औपनिवेशीकरण ब्रिटिश सत्ता द्वारा किया गया अंग्रेजों के साम्राज्यवादी हितों, सामरिक स्वार्थों, प्रतिरक्षा तथा व्यापार के कारण पर्यावरणात्मक और पारिस्थितिकी बदलाव आए। शक्ति और कठोर प्रशासन के बल पर अंग्रेजों ने प्रकृति पर अपना अधिकार जमा लिया और कबीलों तथा प्रकृति का सामंजस्य टूट गया। इस भाग में हम साम्राज्यवादी शासन के राजनैतिक उद्देश्यों की चर्चा करेंगे। पहाड़ों पर विशिष्टता का आधिपत्य ब्रिटिश राज की नीति का एक अभिन्न अंग था तथा ब्रिटिश हुकूमत द्वारा अन्य समकालीन हिन्दू राजाओं तथा विदेशी प्रतिद्वंद्वियों पर अपनी सत्ता और ताकत के प्रदर्शन की कोशिश था। सर बर्टल फ्ररे ने इस भव्य राजसी महत्वाकांक्षी धारणाओं सत्ता बारे में कहा था- "प्रत्येक महान भारतीय शासक जो सभ्यता के प्रति जरा भी जागरूक है वो अपने लिए गर्मियों तथा ठंड के मौसम में अलग अलग मकान बनवाता है। तीखी सड़ी गर्मी के कुछ महीनों में पहाड़ों पर रहना, अच्छा प्रशासन चलाने के लिए प्रेरणादायक, स्फूत्ति प्रदान करने वाला माना जाता था। इसके अतिरिक्त कुछ सामरिक एवं राजनैतिक महत्व के मुद्दे भी दांव पर लगे थे। विशेषकर हिमालय की क्षेत्र सरहदी व्यापार तथा वहां पाई जाने वाली बहुमूल्य इमारती लकड़ियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। साम्राज्यवादी स्थापत्य शैली पहाड़ी इलाकों में राजसी सत्ता के प्रदर्शन का सशक्त प्रतीक बन गई थी। वास्तुकला के रूप में ही मनुष्य सभ्यता का प्रमाण छोड़ देता है। स्थापत्यविदिक कार्यों द्वारा किसी भी कलाकार के "बौद्धिक सौंदर्य" का प्रदर्शन कलात्मक ढंग से होता है। इसके अतिरिक्त निर्माण कार्य में प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं एवं निर्माण सामग्री किसी भी शासन काल की भौतिक संस्कृति का परिचायक भी होती है। भारत में ब्रिटिश स्थापत्य कला के प्रदर्शन या प्रमाणों में ब्रिटिश राज्य के दृष्टिकोण परिलक्षित होते हैं।

शिमला में निर्मित वायसराज लाज, अनेक शासकीय कार्यालय, लेफ्टिनेंट गवर्नर गर्वनरों के आवास एवं कार्यालय भवन तथा सचिवालय, ब्रिटिश साम्राज्य की अखंड तथा शक्तिशाली सामर्थ्य एवं सत्ता के प्रतीक हैं। पूर्व में बने पहले के छोटे छप्पर वाले छोटे कमजोर मिट्टी के मकानों तथा शीघ्र ही लोहे तथा सीमेंट से बनी पक्की भव्य इमारतों ने ले लिया था।

आब्जरवेटरी हिल के ऊपर भव्य वायसराज लॉज का निर्माण पहाड़ की चोटी पर एक बड़ा हिस्सा समतल सपाट कर बड़ी मेहनत से बनाया गया था। हेनरी इरविन नामक इंजीनियर के निर्देशन में इस लॉज का निर्माण कार्य 1886 सं. प्रारंभ किया गया था तथा दो वर्षों में इसे पूरा कर लिया गया था। इस वायसराय लॉज में रुकने वाले प्रथम व्यक्ति वायसराय लार्ड डफरिन थे।

यह लॉज ट्यूडर शैली में बनाया गया है परंतु अधिकांश हिस्सा पास पड़ोस के पत्थर की खदानों से निकले गए ग्रे पत्थरों से बनाय गया है। इस लॉज का मुख्य भाग तीन हिस्सों में है। पश्चिमी हिस्से में

दो मंजिले हैं तथा रसोई वाला हिस्सा पांच मंजिला है। किचन, बेकरी, शराब खाना, बर्तन, क्राकरी रखने के लिए अलग कमरे, विशेष रूप से बनाई गई सीढ़िया, नाचघर तथा 19वीं शताब्दी की आधुनिक अवधारणा को ध्यान में रखते हुए लिफ्ट भी लगी हुई है। ऊटकमंड गर्वन्मेंट हाउस तत्कालीन मद्रास के गर्वनर ड्यूक ऑफ बकइनघम के नेतृत्व में दिशा निर्देश में 1877 में बनवाया गया था। यह इंगलैंड के बंकिघम शायर में स्टोव से बनी शाही आवास व्यवस्था की अनुकृति ही है। यह काफी बड़ी भव्य इमारत है तथा इसमें सुंदर स्नानागर तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाए गए कई कमरे हैं।

बंगाल के लेफ्टिनेंट गर्वनर के लिए दार्जलिंग में गर्मियों में रहने के लिए बनाया गया विशेष आवास 'शबबेरी' कृत्रिम रूप से बनाए गए सुंदर बगीचे के लिए प्रसिद्ध है। यह शासकीय अवास किसी गांव में बने एक सुंदर भव्य फार्म हाउस का आभास देता है। बाद में यहां एक अन्य दरबार हॉल भी बनाया गया। शिमला में वर्ष 1880 में बड़े पैमाने पर सार्वजनिक भवन निर्माण के कार्य शुरू किए गए। सचिवालय भवन, सेना मुख्यालय, डाकघर भवन, लोक निर्माण सचिवालय, टेलीग्राफ आफिस, विदेश कार्यालय के बड़े भव्य कलात्मक भवन बनवाए गए। इस प्रकार यह बड़े सार्वजनिक भवन पहाड़ी क्षेत्र में अंग्रेजी सत्ता और प्रभुत्ता के प्रत्यक्ष प्रतीक एवं प्रमाण थे। पहाड़ों का वातावरण इंगलैंड के महानगरों में रहने वाले औपनिवेशिक अभिजात्यवर्ग के लोगों की आवश्यकताओं तथा रुचियों के अनुरूप बदला गया। शिमला में विदेशी कार्यालय, पहाड़ी का समतल करके बनाया गया था। यह एक विशेष इंगलिश शैली (chalet style) में बनाया गया है। सेना प्रमुख के रहने के लिए स्नौडौन भवन 1873 में खरीदा गया था। पंजाब के लेफ्टिनेन्ट गर्वनर का शासकीय आवास सन 1800 में पंजाब सरकार द्वारा खरीदा गया था। औपनिवेशिक राज्य के अभिजात्य वर्ग की श्रेष्ठता तथा उच्चता को बनाए रखने तथा अपने ही प्रशसकीय तंत्र से निचले वर्गों से दूरी बनाए रखने के लिए पहाड़ों के पर्यावरण में एक प्रशासकीय दूरी बनाए रखने की परम्परा लागू की गई। इसीलिए शिमला की सबसे ऊँची चोटी पर अपनी श्रेष्ठता तथा प्रशासकीय तंत्र के कड़े अनुशासन को बनाए रखने के लिए वायसरॉय तथा आर्मी कमान्डर के मकान बनाए गए थे। रूडयार्ड किपलिंग ने सत्ता की संरचना में इस अलगाव व विलगाव का सच्चा प्रमाण शिमला में देखा। उन्होंने देखा- "शिमला एक तरह से बिलकुल नई दुनिया थी। यहां प्रशासकीय तंत्र ऊपर से नीचे क्रमानुसार रहता था। पहाड़ों पर पदानुक्रम सबने देखा और अनुभव किया होगा जहां छोटे सबके के कर्मचारियों को कोई परवाह नहीं की जाती थी। यहां वायसरॉय तथा फौजी अफसरों के सहायक तथा ए.डी.सी. भी थे। शिमला में निर्मित वायरॉज लॉज पूरे पैमाने पर अपनी भव्यता, उच्चता प्रभाव तथा साम्राज्यिक संस्कृति की सत्ता का द्योत्तक था। दुनिया में ऐसी बहुत थोड़ी सी जगहें होगी, जहां उच्चतम अधिकारी वाकई इतनी ऊँचाई पर रहते हों।" वायसरॉय तथा फौज के सेनाध्यक्ष के रहने की जगह सबसे ऊँचाई पर थी। इस इलाके की उबड़ खाबड़ पथरीली जमीन को प्रभावशाली की विशिष्ट फ़ौजी, आमोद धार्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया था।

पहाड़ों पर धार्मिक संस्थाएं शासकों की आध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति तो किया ही करती थी साथ में वे स्थानीय निवासियों/आदिवासियों के उपनिवेशवाद के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने में मददगार थी। ब्रिटिश साम्राज्यिक प्रयासों के साथ-साथ धार्मिक संस्थाओं द्वारा किए गए ये प्रयास इस क्षेत्र में सभ्यता एवं प्रगति का प्रसार करने की दिशा में एकदम थे।

ऊटकमंड में सेंट स्टीफेन्स चर्च, सेंट थॉमर्स चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च, कान्वेन्ट और यूनियन चैपल तथा जियोन चैपल का निर्माण किया गया। दार्जलिंग में सेंट एन्ड्रयू चर्च की स्थापना 1887 में की गई जो इंगलैंड के चर्च के अधीन था। यूनियन चैपल 1869 में बनाया गया। शिमला में क्राइस्ट चर्च माल रोड पर सबसे ऊँचाई पर स्थित था। साम्राज्यिक सत्ता संरचना के केंद्र में यह चर्च स्थित था क्योंकि राज्याभिषेक तथा अन्य शाही कार्यक्रम इस चर्च के परिसर में आयोजित हुआ करते थे। शैक्षणिक संस्थाओं तथा विद्यालयों का भी सत्ता संगठन तथा संरचना में महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा एक प्रभावशाली मार्ग व दिशा दे रही थी जिंसर्से शासकों या उनके बच्चों को आम अन्य लोगों से पदानुक्रम में सर्वोच्च रखा जा सके। पहाड़ों का स्वच्छ, शुद्ध वातावरण, बच्चों के पोषण और विकास के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करता था। 1907 में दार्जलिंग गजेटियर के अनुसार- "थोड़े ही दिनों में दुबले,

पतले, निस्तेज, जिद्दी तथा चिड़चिड़े बच्चे, मोटे ताजे गुलाबी तंदुरूस्त तथा सक्रिय हो जाते थे। बहुत से बच्चे जो मैदानी इलाकों में पेट की बीमारियों या बीच बीच में आने वाले बुखार से हमेशा पीड़ित रहते थे वे थोड़े ही दिनों में पहाड़ पर आकर बिलकुल ही अलग प्रकार के हो जाते थे और जल्द की अंग्रेज बच्चों की तरह स्वस्थ और लाल गोल मटोल हो जाते थे।

पहाड़ों में शिक्षा लोकप्रिय हो गई थी, जिससे वातावरण में पर्याप्त परिवर्तन आया। ऊटकमंड में ब्रीकस मेमोरियल स्कूल, शिमला में कलकत्ता विश्वविद्यालय से जुड़ा विशप कॉटन स्कूल तथा दार्जिलिंग में सेटपाल स्कूल, सेंट जोसेफ स्कूल तथा लोरेट कान्वेंट तथा नैनीताल में शेरवुड स्कूल की स्थापना की गई।

इस पहाड़ों का उन्मुक्त शुद्ध वातावरण व पर्यावरण इस तरह बदल गया कि अंग्रेजों का प्रभाव, सामाजिक संरचना तथा भौतिक पर्यावरण दोनों पर दृष्टिगोचर होने लगा।

बोध प्रश्न 2

1) शिमला किस प्रकार एक लोकप्रिय हिल स्टेशन बना ? इस पर 10 वाक्य लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पहाड़ों पर किस प्रकार नई अंग्रेजी स्थापत्य शैली विदेशी सत्ता की प्रतीक बनी ?

.....

.....

.....

.....

27.5 स्थानीय समुदायों का विस्थापन

भारतीय पहाड़ अनेक स्थानीय आदिवासी समुदायों की आश्रम स्थल है। ये आदिवासी प्रकृति के साथ बहुत घुल मिल कर रहते हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन यापन जंगल से मिलने वाली अनेक चीजों पर निर्भर करता है। वनों के साथ नियमित निरंतर सम्पर्क में आने के कारण वे एक विनिर्दिष्ट मूल्य व्यवस्था तथा जीवन शैली विकसित कर लेते हैं तथा पहाड़ों के मूल पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट होने से बचाने के लिए एक विशेष परम्परा को स्थापित करते हैं। पहाड़ों पर अनेक धार्मिक स्थान तथा पूजा व श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप अनेक देवी देवताओं की मूर्तियों की उपस्थिति वहां की जमीन के संरक्षण के लिए एक पारम्परिक अवधारणा को बढ़ावा देती है।

ऊटकमंड में टोडा, दार्जिलिंग तथा सिक्किम क्षेत्र के लेपचा तथा कुमायूं क्षेत्र के डोम वहां के स्थानीय पुराने आदिवासी माने जाते हैं। इन सबका प्रकृति से बड़ा अच्छा तालमेल, तादात्म्य तथा स्नेह रहता है। यह निवासी पारम्परिक झूम शैली में कृषि करते हैं तथा एक दूसरे से अधिक दूरी पर बनी अकेली झोपड़ियों में अलग अलग रहते हैं।

कई स्थानों पर विशेष कर ऊटकमंड तथा गढ़वाल क्षेत्रों में पूर्णत: विकसित तथा सीढ़ी दार खेतों को उस क्षेत्र में जाने वाले अनेक यात्रियों/पर्यटकों ने देखा है। ऊटकमांड से बाहर आकर बसे कृषक समुदाय बडागर तथा दार्जलिंग में नेपालियों ने कृषि उत्पादन का कार्य सबसे पहले प्रारंभ किया था।

सामान्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र में भूमि स्वामित्व में गहरी असमानता थी। रामचंद्र गुहा ने टेहरी गढ़वाल गढ़वा और कुमायूं के अध्ययन में पाया कि पूरे गांव के समुदाय में गहरा मतैक्य था। इस एकरूपता व मतैक्य की संस्थात्मक भावाभिव्यक्ति थी ग्राम पंचायत। वनों और जंगलों के प्रति अपार श्रद्धा और पवित्रता की भावना ने एक प्राकर के वनों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक घेरा डाल दिया था। यही वन उनके लिए प्रमुख संसाधन थे।

हालाँकि यह सब उपनिवेश राज्य की सत्ता के हस्तक्षेप से धीरे धीरे खत्म होता चला गया। यह ह्रास या अवरोध नीचे दिए गए उदाहरणों से पूर्णत: स्पष्ट है :

विगत कुछ सालों में चाय के बगान लगाने वाले यूरोपियनों तथा सश्क्त उत्साही नेपाली कृषकों ने इन पहाड़ों पर अधिकांश वृक्षों की भरी पैमाने पर अवैध कटाई कर ली जबकि स्थानीय वन विभाग, कृषि की पुरानी प्रणाली के विरूद्ध है। यही कारण है कि यहां की रहने वाली आदिवासी समुदायों को पहाड़ी स्थलों से अन्यत्र भागना पड़ा, विस्थापित होना पड़ा।

उपरोक्त कथन मूलत: दार्जिलिंग में रहने वाले मूल लेपचा निवासियों की करुण व दरुण स्थिति के बारे में बतलाता है यही बात अन्य स्थानों पर लागू होती है।

वैज्ञानिक प्रबंधन तथा आरक्षित वनों ने इन स्थानीय निवासियों की पारम्परिक गतिविधियों पर अंकुश लगा दिया तथा उन्हें सीमित कर दिया। प्रकृति के साथ उनकी साम्यता और एकरूपता धीरे धीरे उखड़ती गई तथा सीमित हो गई। वनों में रहने वाले स्थानीय आदिवासियों को वनों में और अधिक अंदर घने इलाकों में खदेड़ दिया गया। चूंकि वे अपने जीवन यापन के लिए कृषि की पुश्तैनी गतिविधियां करने से वंचित हो गए थे अत: उन्हें औपनिवेशीय प्रशासकीय तंत्र में अनेक छोटे मोटे निम्न स्तर के कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वनों के बड़े बड़े भूखंड आरक्षित करने का अर्थ व उद्देश्य यह था कि वनों पर आश्रित रहने वाले समुदायों का अपने प्राकृतिक वास पर अधिकाधिक नियंत्रण खो देना। वाणिज्यिक वानिकी के लिए सामूहिक मालिकाना हक को समाप्त कर व्यक्तिगत मालिकाना अधिकार को महत्व दिया गया। इसके कारण इंसानों तथ जंगलों के बीच संबंध प्रभावशाली ढंग से टूट गए। खंड 4 की इकाई 12 में विकासीय योजनाओं को स्थानीय पहाड़ी समुदायों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव के विषय में विस्तार से बताया गया है।

27.6 आमोद प्रमोद तथा पर्यावरण

भारत में राज चलाने के लिए आए और आकर बसने वाली विदेशी व्यक्तियों का व्यवहार, आदतें तथा आमोद प्रमोद व मनोरंजन की गतिविधियों ने पहाड़ों के पर्यावरण में गहरा परिर्वतन किया। आप पहले ही जान चुके हैं कि नए नए भवानों का निर्माण, नई सड़कें, रेल लाइनें बिछाना, नई वास्तुशिल्प, बड़े बड़े चर्च तथा शैक्षणिक संस्थाओं के भवन निर्माण की गतिविधि ने किस प्रकार वर्तमान में पहाड़ों पर उपलब्ध सुंदर भूदृश्यावलियों तथा पर्यावरण का विनाश किया तथा विपरीत प्रभाव डाला।
उपनिवेशवादियों के बसने और हस्तक्षेप के कारण स्थानीय मूल निवासियों को अन्यत्र विस्थापित होना पड़ा। इस सबके अतिरिक्त ब्रिटिश शासकों की मनोरंजन गतिविधियों ने पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित किया। यह एक तरह से भारतीय पहाड़ों को पूर्ण रूप से पर्यटन के केन्द्र में परिवर्तित व विकसित करने की प्रक्रिया का शुभारंभ ही था। उदाहरण के लिए छोटे बड़े जानवरों का शिकार रोमांच प्रिय यूरोपियनों/अंग्रेजों का सबसे पसंदीदा मनोरंजन तथा समय काटने का साधन था। वास्तव में सभी हिल स्टेशनों पर शिकार समस्त गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। पर्यटकों के देखने के लिए पहाड़ों के घने जंगलों में अनेक जंगली जानवर थे, शिकार के लिए विशेष यात्राएं आयोजित की जाती थीं। इस प्रकार पहाड़ों के घने जंगलों में छोटे बड़े जानवर तथा अनेक पक्षियों का रोमांच प्रिय शिकार के शौकीन उत्सुक व्यक्तियों द्वारा पीछा किया जाता था। इसी कारण पहाड़ी इलाकों में वन्य

प्राणी जीवन का एक बड़ा हिस्सा धीरे धीरे खत्म हो गया, कम हो गया।

उसी प्रकार पहाड़ों में उपलब्ध प्राकृतिक भूदृश्यावलियों तथा सुंदरता को पर्यटकों की रुचि के अनुरूप कृत्रिम तरीके से बड़े बड़े उद्यानों तथा वानस्पतिक उद्यानों में संरक्षित-परिवर्तित किया गया। सार्वजनिक उद्यान बनाए। ऊटकमंड में, उद्यान लगाने के लिए विशेष तौर से किन (ken) एक माली बुलवाया गया था ताकि वो अपने निर्देशन तथा देख रेख में बगीचा लगवाने का कार्य करवा सके। शिमला में आनाडाले उद्यान विशेष रूप से सुंदर फूलों के पौधे लगाने के लिए विकसित किया गया था।

इस प्रकार औपनिवेशिक समुदायों के सदस्यों के आमोद प्रमोद तथा मनोरंजन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पहाड़ों के पर्यावरण में अनेक परिवर्तन, संशोधन तथा कृत्रिम रूप से उन्नयन किया गया। घुड़सवारी तथा पोलो जैसे खेलों के लिए विस्तृत सपाट बड़े मैदानों की जरूरत पड़ती थी परंतु क्रिकेट जैसे खेलों के लिए भी पहाड़ों की ऊँची नीची जमीन को समतल करने की आवश्यकता थी। (ऊटकमंड, नैनीताल तथा कोडइकनाल जैसे हिल स्टेशन में वर्तमान यह सुविधाएं हैं) पाल वाली नावें चलाने तथा नौका विहार के लिए बड़ी कृत्रिम झीलें बनाने या वर्तमान में उपलब्ध जल स्रोतों की दिशा बदलने की आवश्यकता थी। अच्छी किताबें पढ़ने के शौक, जो संभ्रांत पढ़े लिखे ऊँचे तबके के अंग्रेज वर्ग का एक लोकप्रिय शौक था, के कारण बड़ी लाइब्रेरी की जरूरत पड़ी। शिमला, मसूरी तथा दार्जलिंग के ठंड के मौसम में मनोरंजन के लिए स्केटिंग रिंग तथा बर्फ के खेल खेलने के लिए रिंग बनाने की योजना बनाई गई। पर्यावरण में इसी प्रकार का परिवर्तन व संशोधन किया गया कि सामाजिक मेल मिलाप तथा मनोरंजन को पर्याप्त प्रोत्साहन मिल सके। इसलिए शिमला की मालरोड जो ब्रिटिश काल से सभी प्रमुख सामाजिक गतिविधियों का केंद्र थीं, विशेष रूप से इस प्रकार बनाई गई थी कि वो शिमला शहर के लगभग बीचों बीच लम्बाई में स्थित थी तथा जिसके माध्यम से शिमला में बड़े-बड़े चर्च, मुख्य होटल, वाचनालय, सांस्कृतिक क्लब तथा अंग्रेजों द्वारा चलाए जाने वाले डिपार्टमेंटल स्टोर्स तक आसानी से जाया जा सके।

27.7 पर्यावरणीय प्रभाव

हिमालय तथा नीलगिरी पहाड़ों की सुंदर दृश्यावलियों तथा अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य ने यूरोपवासियों को अपनी ओर आकर्षित किया था। यदि भारतीय इन हिमाच्छादित चोटियों से आध्यात्वाद की ओर आकृष्ट हुए थे तो यूरोपवासी इन पहाड़ों के रोमांस से आकर्षित हुए थे। विशिष्ट वर्ग के यूरोपवासियों के आगमन के कारण पहाड़ों में अनेक पर्यावरणीय परिवर्तन हुए। यह परिवर्तन प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति शाश्वत प्रेम तथा विकासीय गतिविधियों के बीच हुए द्वंद्व के रूप में सामने आया। भारी मात्रा और पैमाने में हुए निर्माण कार्यों के कारण पहाड़ों पर बुरा असर पड़ा। जैसे जैसे अंग्रेज सत्ता पहाड़ों पर स्थापित हुई ये हिल स्टेशन शीघ्र ही शहरी केंद्रों के रूप में परिवर्तित और विकसित हो गए। यह कार्य दो कारणों से हुआ। एक तो ब्रिटिश राज की प्रशासकीय आवश्यकताओं के कारण और दूसरा यूरोपियनों के मनोरंजन की रुचियों के कारण। बड़े पैमाने पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करके तथा ऊबड़ खाबड़ पथरीली जमीन को समतल करके व्याक निर्माण कार्य प्रारंभ करवाए गए। अकृष्टपूर्व अछूती पहाड़ी भूमि पर सुनियोजित ढंग से सड़कें बनवाई गई तथा रेलवे लाइन बिछाने के लिए वनों का दोहन किया गया तथा रेलवे स्लीपर बनाने के लिए जंगल की टिम्बी लकड़ियों का भरपूर उपयोग किया गया। पहाड़ी क्षेत्रों में अंग्रेजी प्रशासन तथा सत्ता के शहरी नगर नियोजन का साधन बने। इन विकासीय निर्माण कार्यों ने रोमांसवादियों के आदर्शवादी ग्रामीण परिप्रेक्ष्य को चोट पहुंचाई। स्थानीय पहाड़ी लोग अंग्रेजों को अच्छे आकर्षक लगे तथा उन्हें वे पहाड़ों की प्राकृतिक सौंदर्य का अभिन्न अंग ही मानते थे। उन स्थानीय पहाड़ियों के उत्साह तथा रंगीन पहनावे का शौक तथा त्योहारों को उमंग से मनाने के उत्साह ने अंग्रेजों की "ओरिएंट" की मान्यता को सुदृढ़ किया। इसके साथ ही अंग्रेज राज के सभ्यता और प्रगति को बढ़ावा देने के उद्देश्य तथा व्यावसायिक लाभ पर नजर रखने के परिप्रेक्ष्य ने स्थानीय मूल निवासियों को अंग्रेजों को बनाए और उन पर थोपे गए अनेक कड़े नियम कायदों का पालन करने के लिए मजबूर किया। वनों से प्राप्त की जाने वाली उपयोगी वस्तुओं पर स्थानीय समुदायों का असीमित अधिकार अंग्रेज राज्य की वैज्ञानिक वन प्रबंधन तकनीक तथा आरक्षित

वनों की नीति के कारण बहुत सीमित हो गया। हिल स्टेशनों पर स्थानीय निवासियों की गतिविधियों और भी अधिक सीमित हो गई क्योंकि हिल स्टेशन के बड़े हिस्से विशेष रूप से अंग्रेजों के उपयोग के लिए आरक्षित कर लिए गए।

साफ सफाई तथा स्वास्थ्य के प्रति अंग्रेजों के आग्रह के कारण स्थानीय निवासियों के लिए और अधिक कड़े नियम बनाए गए। स्थानीय निवासियों की गतिविधियों तथा आने जाने पर कृत्रिम तौर से नियंत्रण लग गया। स्वास्थ्य तथा साफ सफाई पर विशेष रूप से अधिक ध्यान दिए जाने का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति अंग्रेजी दृष्टिकोण के अनुसार स्थानीय लोगों के जीवन की दैनिक दिनचर्या नियंत्रित करना था। इसके पहले ये निवासी इन उन्मुक्त पहाड़ों के स्वछंद निरंकुश मालिक थे तथा यह पहाड़ी समुदाय अपने प्राकृतिक नैसर्गिक प्राकृतिक वास से पूरी सभ्यता तथा अनुरूपता बनाए हुए थे। धीरे धीरे वे अंग्रेजों के अधीन हो गए तथा उनका महत्व कम होता चला गया।

हिल स्टेशनों में व्यापक परिवर्तन तथा बड़े पैमाने पर किए गए और करवाए जाने वाले निर्माण कार्यों से पहाड़ों के पर्यावरण पर अनेक प्रकार से विपरीत प्रभाव पड़ा। पेड़ तथा वनों की अंधाधुंध कटाई तथा तेजी से होने वाले बड़े पैमाने पर हुए निर्माण कार्यों ने संरक्षण की समस्या पैदा कर दी। पहाड़ों पर उस क्षेत्र की क्षमता से अधिक प्रगति की तेज रफ्तार के कारण पहाड़ों के पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी संतुलन के बिगड़ने की संभावना थी। पहाड़ों की शुद्ध, स्वच्छ हवा धीरे-धीरे पहाड़ों पर बसने वाली निरंतर बढ़ती आबादी द्वारा फैलाई जाने वाली अपशिष्ट तथा अन्य फैलाई गई गदंगी की दुर्गंध में बदल गई। गंदे पानी के निकास तथा नालियों की व्यवस्था पहाड़ों में अचानक बढ़ी हुई आबादी का दबाव सहने में असमर्थ थी।

बींसवी शताब्दी तक पर्यावरण में हो रहा ह्रास चिंतनीय हो गया। पहाड़ों का स्वास्थ्यवर्द्धक तथा आनन्द प्रदान करने वाला वातावरण जो विकलांग और मरीजों के लिए उपयोगी था धीरे धीरे दूषित होने लगा। अधिक आबादी, अधिक निर्माण कार्य तथा अत्यधिक भीड़ के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन तथा भूमि क्षरण की प्रक्रिया अधिक होने लगी। वर्ष 1820 में नैनीताल में एक भीषण भूस्खलन हुआ। इसने भीषण हृदय विदारक परिणामों तथा गहरे पर्यावरण ह्रास के सामने लाकर रख दिया जिसका मूल कारण पहाड़ी क्षेत्रों में विकासीय कार्य व प्रगति थे। मकान, उद्यान, सड़क तथा टेनिस कोर्ट बनाने के लिए पहाड़ों की अनियंत्रित अंधाधुंध कटाई तथा तोड़ फोड़ के कारण पहाड़ों की प्राकृकि भूव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। नैनीताल में सड़कों के निर्माण के लिए पत्थरों की खुदाई के लिए भारी विस्फोट करना जरूरी हो गया। इस हिल स्टेशन का पूरा दक्षिणी भाग, आसानी व सरलता से टूटने वाली चट्टानों से भरा हुआ था। इस भाग में पाई जाने वाली ये पथरीला पहाड़ियां प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली घास तथा झाड़ियों तथा पेड़ों के कारण आपस में मजबूती से जुड़ी थीं। नैनीताल के तेजी से होने वाला विकास ने विशषकर शेर का डान्डा वाली पहाड़ी के विकास ने जल निकासी समस्या उत्पन्न कर दी। इन इलाकों में भारी वर्षा का पानी जो अपने प्राकृतिक बहाव के कारण नीचे ढलान की ओर बहता था। रास्ते में घास, झाड़ियां, पेड़ पौधों के वहां की मिट्टी को बहा नहीं सकता था जिसके कारण भूस्खलन नहीं हो पाता था या बहुत कम होता था। हालांकि भारी पैमाने पर पहाड़ों की अनियंत्रित कटाई के कारण तथा सड़कों और मकानों के निर्माण के लिए पहाड़ी भूमि के समतलीकरण के कारण वर्षा का पानी पहाड़ी के भीतरी भाग में ही जमा रहता था और जहां भी उसे रास्ता मिलता था वहां से निकलकर नैनीताल के ताल में मिल जाता था जिससे ताल प्रदूषित होता था। वर्षा का पानी जो पहाड़ों में घुस जाता था उसे निकलने के लिए रास्ता नहीं मिल पाता था जिससे पूरे पहाड़ी क्षेत्र में पानी भर जाता था। इससे पहाड़ी इलाकों में दरार पड़ जाती थी तथा पहाड़ों का धसान होता है। चूंकि इन प्रक्रियाओं में प्राकृतिक वनस्पतियां उखड़ जाती हैं इससे वर्षा का पानी बहकर बड़े बड़े गड्ढ़ों में भर जाता है। जिससे पहाड़ों की खड्ड के निचले किनारे लगातार कटते रहते हैं। इन सब कारणों से संरक्षण तथा स्वच्छता के लिए समस्याएं उत्पन्न होती है। यह सब हानिकारक पर्यावरणीय प्रभावों को परिलक्षित करते हैं जो पर्यटन उद्योग तथा व्यावसायिक, वाणिज्यिक गतिविधियों की संस्थाओं को आपसी सहयोग से पैदा होती है।

ऊटकमंड में व्यावसायिक लाभ के लिए भारी संख्या में गोंद के पेड़ लगाने के लिए शोला के हरे भरे

पेड़ काट डाले गए। इस प्रक्रिया ने स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा कर दी जो इन व्यावसायिक ते विकासीय कार्यों के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में नहीं थी। सांस्कृतिक रूप से परिवर्तित कृत्रिम वातावरण के कारण समस्या उत्पन्न हुई जैसा की ऊपर नैनीताल के विषय में बतलाया गया है जिसने पहाड़ों के नाजुक संवेदनशील पारिस्थितिकी को भी असंतुलित कर दिया। पहाड़ों में पानी के निकास की समस्या उत्पन्न हुई आबादी के लिए पेयजल की गंभीर कमी हुई तथा प्राकृतिक झरनों तथा झीलों में प्रदूषण हुआ। 1908 में फेडरिक प्राइस ने इन विकासीय कार्यों के कारण पड़ने व होने वाले ऋणात्मक प्रभावों को इन शब्दों में व्यक्त किया है :

पुराने जमाने में सुलिवान के अलावा भी बहुत से लोगों ने ऊटकमंड के बारे में बहुत सी बढ़ी-चढ़ी बातों की भविष्यवाणी की है जिनके अनुसार इस गर्म ऊटकमंड के बारे में बहुत सी बढ़ी-चढ़ी बातों की भविष्यवाणी की है जिनके अनुसार इस गर्म ऊटकमंड क्षेत्र में यूरोप के गोशान देश और इंगलैंड के सुहावने मौसम वाली जगह है। जहां यूरोपवासी आसानी व सरलता से बस सकते हैं जहां यूरोपीय अनेक प्रकार के फार्म, उद्यान तथा डेयरी फार्म से खूब धन काम सकते हैं। इसकी तुलना "भारतीय आदर्श" से की गई है। मगर यह भविष्यवाणी न पूरी हो सकी और न पूरी होगी। उसने यह भी महसूस किया कि शिकार की प्रवृत्ति ने शीघ्र ही पहाड़ों में वन्य जगत को हानि पहुंचाई। कम कर दिया। शिकार के नाम पर प्रत्येक प्रकार का जानवर फिर चाहे वह चौपाया हो या पंख वाले पक्षी सब बेरहमी से मार डाल गए। डाडो बेट्टा तथा स्नोडोन की पहाड़ियों से सांभर हमेशा के लिए खत्म हो गए। एक भी जंगली मुर्गी का दिखाना अनोखा माना जाता था। पहाड़ों का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। सिर्फ भौतिक विकास की प्रगति ही दिखलाई पड़ती थी। पहाड़ों की सुंदर दृश्यावलियों के सौंदर्य, मन हरने वाले प्राकृतिक गुणों व आकर्षण पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

बोध प्रश्न 3

1) किस प्रकार अंग्रेजों की आमोद प्रमोद की गतिविधियों ने पहाड़ों के भू दृश्यों को प्रभावित किया है ?

.....

.....

.....

.....

2) विकासीय योजनाओं के प्रभाव, पर्यटन उद्योग तथा अधिक जनसंख्या ने किस प्रकार पहाड़ों के पर्यावरण पर असर डाला ? इस पर दस वाक्य लिखें।

.....

.....

.....

.....

27.8 सारांश

इस इकाई का प्रारंभ पहाड़ों के संबंध में अनादिकाल से विभिन्न दृष्टिकोणों व प्रचलित अवधारणाओं के संबंध में आपको परिचित कराने से किया गया है। पारम्परिक भारतीय सोच पहाड़ों के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा की थी, इसके परिणामस्वरूप पहाड़, तीर्थ केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। भारत में अंग्रेजों के आगमन से पहाड़ों के प्रति नई अवधारणा विकसित हुई। एक ओर तो पहाड़ों के प्रति रोमांटिक तथा रोमांचक अवधारणा थी जिसके कारण यह पहाड़ रहस्य तथा सुंदरता के स्रोत बने और दूसरी ओर

पहाड़ों के अन्य सकारात्मक तथा लाभात्मक पहलूओं को भी उभारा गया। इन्हीं दोनों प्रकार की अवधारणाओं के कारण दार्जलिंग, शिमला, ऊटी तथा नैनीताल जैसे कुछ प्रसिद्ध लोकप्रिय हिल स्टेशनों का विकास हुआ। इस इकाई में हिल स्टेशनों के निर्माण की प्रक्रिया को भी विस्तृत रूप से बतलाया गया है।

हिल स्टेशनों के विकास ने पहाड़ों में आबादी को बढ़ावा दिया वहां अधिक लोगों तथा नई स्थापत्य कलाओं को प्रोत्साहित किया। इस इकाई में हिल स्टेशनों के विकास का विवरण दिया गया। इसकी वजह से पहाड़ों की प्राकृतिक भूव्यवस्था में तथा वहां रहने वाले सीधे साधे सरल पहाड़ी लोगों के समुदाय के जीवन में भी परिवर्तन हुआ। इन सब विषयों पर इस इकाई में चर्चा की गई है।

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आप अपने उत्तर में हिन्दू धर्म की अवधारणा में प्रकृतिगत पहलुओं की अपेक्षा पहाड़ों के धार्मिक महत्व पर अधिक बल दें। देखें उपभाग 27.2.1

2) आपके उत्तर में निम्न बातों को महत्व दिया जाना चाहिए।
   क) सौन्दर्यात्मक तथा रोमान्टिक
   ख) औषधियुक्त तथा व्यावसायिक
   ग) ब्रिटिश अवधारणा के अनुसार सैनिक तथा फौजी महत्व

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 27.3.1

2) आपके उत्तर में यह समाहित होना चाहिए
   क) किस प्रकार पहाड़ों में अपनाई गई स्थापत्य शैली पहाड़ी स्थानों पर अंग्रजों के प्रभुत्व को दर्शाती है।
   ख) किस प्रकार नई स्थापत्य इस क्षेत्र में पहाड़ों के पर्यावरण के ऊपर अपनी यांत्रिकी, वैज्ञानिकी तथा औद्योगिक प्रभुता का प्रतिनिधित्व करती थी।
   ग) किस प्रकार सरकारी भवन अपने आप में सत्त संरचना की विभिन्न स्थितियों की प्रतीक थी ? देखें भाग 27.4

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में यह स्पष्ट होना चाहिए

क) किस प्रकार शिकार की प्रवृत्ति ने पाए जाने वाले वन्य प्राणियों को प्रभावित किया ?

ख) किस प्रकार क्रिकेट, घुड़सवारी, पोलो तथा गोल्फ खेलने वालों ने पहाड़ों की भूदृश्यावली को बदल डाला।

ग) देखें उपभाग 25.7

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

लइक फतेह अली : **अवर एन्वायरमेंट**, एन.वी.टी., नई दिल्ली

रामचंद्र गुहा और : **दिस फिशरल लैंड : एन कोलोजिकल हिस्ट्री आफ इंडिया,**

माधव गाडगिल : आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली. 1992

एक्सेंट, कम्पोजिशन, डेंसिटी ग्रोइंग स्टॉक एंड एनुवल इंक्रिमेंट आफ इंडिया फारेस्ट, फारेस्ट सर्वे आफ इंडिया, मिनिस्ट्री आफ एन्वायरमेंट एवं फारेस्ट, भारत सरकार, 1995

इस खंड के लिए कुछ अभ्यास

अभ्यास 1

आप अपना भ्रमण कार्यक्रम विशिष्ट रूप से वन्य जगत तथा वनस्पति जगत अलग बनाएं। अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले पेड़ पौधों और पक्षियों की सूची बनाएं।

अभ्यास 2

अभ्यास 1 के माध्यम से एकत्रित जानकारियों के पैकेज को माध्यम बनाकर, पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास करें। एक टूरिस्ट गाइड के रूप में इस एकत्रित जानकारी के माध्यम से अपने क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास करें।

अभ्यास 3

किसी भी पहाड़ी स्थल में उपलब्ध स्थापत्य शैली पर एक टिप्पणी तैयार करें तथा इसकी आप अपने शहर में बने मकानों, दुकानों की निर्माण शैली से तुलना करें। यदि आपको कुछ अन्तर दिखलाई पड़े तो उसे अलग से लिखें।

अभ्यास 4

किसी भी पहाड़ी शहर के पर्यावरण पर टिप्पणी लिखें। अब इन विशेषताओं का पर्यटन के लिए प्रोत्साहन के रूप में विश्लेषण करें। पर्यावरण के उन पहलूओं को भी समझने की कोशिश करें जिनका पर्यटकों तथा पर्यटन उद्योग के कारण ह्रास हुआ है।